S–2046

Total Page No. : 3] [Roll No.

M.A. II Semester Examination, 2023–24

HINDI

Paper : II

[आधुनिक गद्य (निबन्ध, नाट्य एवं अन्य गद्य विधायें)]

Time : 2 : 30 Hours] [Max. Marks : 80

नोट :- इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं खण्ड 'अ' तथा और 'ब'। खण्ड 'अ' तथा खण्ड 'ब' प्रत्येक से किन्हीं **चार-चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के उत्तर दी गयी उत्तर-पुस्तिका में ही दीजिए। अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जाएगी।

खण्ड–अ

(लघु उत्तरीय प्रश्न) **4×5=20**

1. 'चन्द्रगुप्त' नाटक के आधार पर चाणक्य का चरित्र-चित्रण कीजिए।
2. मोहन राकेश द्वारा रचित समस्त नाटकों का नामोललेख कीजिए।
3. 'कविता क्या है' निबन्ध का सार लिखिए।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए।
5. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के निबन्धों की भाषिक विशेषताओं के बारे में लिखिए।
6. अज्ञेय के निबन्ध 'भारतीयता' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

https://www.sdsuvonline.com

7. संस्मरण को परिभाषित कीजिए।
8. महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरण 'पथ के साथी' के आधार पर निराला के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

खण्ड–ब

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) **4×15=60**

9. गद्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए, इसकी प्रमुख विधाओं का परिचय दीजिए।
10. नाटकीय तत्वों के आधार पर 'चन्द्रगुप्त' नाटक की समीक्षा कीजिए।
11. 'लहरों के राजहंस' नाटक के आधार पर सुन्दरी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
12. प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'चन्द्रगुप्त' की ऐतिहासिकता पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
13. "तपोभूमि गढ़वाल ही संत मत की उद्गम-स्थली हैं।" डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के निबन्ध 'उत्तराखण्ड में संतमत' के आधार पर उक्त कथन की विवेचना कीजिए।
14. निबन्ध के स्वरूप को समझाते हुए इसके विविध रूपों का उल्लेख कीजिए।
15. रेखाचित्र को परिभाषित करते हुए रेखाचित्र रजिया के आधार पर रजिया के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

https://www.sdsuvonline.com

16. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की संसदर्भ व्याख्या कीजिए :

(क) बहुत दिन एकतार जीवन बिताकर लोग अपने से ऊब जाते हैं। तब जहाँ भी कुछ नीवनता दिखाई दे, वे उसी ओर उमड़ पड़ते हैं। यह उत्साह दूध-फेन का उबाल है। चार दिन रहेगा, फिर शांत हो जाएगा।

(ख) भारत की आत्मा सनातन है, भारतीयता केवल एक भौगोलिक परिवृत्ति की छाप नहीं, एक विशिष्ट आध्यात्मिक गुण है, जो भारतीय को सारे संसार से पृथक करता है। भारतीयता मानवीयता का निचोड़ है, उसकी हृदयमणि है, उसका शिर सावतंस है, उसके नाक का बेसर है...

(ग) आज रात्रि को पर्यक पर जाते ही अचानक आँख लग गई। सोते में सोचता हूँ कि इस चलायमान शरीर का कुछ ठीक नहीं। इस संसार में नाम स्थिर रहने की कोई युक्ति निकल आवे तो अच्छा है, क्योंकि यहाँ की रीति देख मुझे पूरा विश्वास होता है कि इस चपल जीवन का क्षण भर का भरोसा नहीं।

****

https://www.sdsuvonline.com